P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मूल अधिकारों कर्त्तव्यों एवं प्रजातान्त्रिक मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाने में समकालीन कथा साहित्य की भूमिका

पुष्पा यादव
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
एम0 बी0 एम0 गर्ल्स डिग्री कालेज, कानपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में कहानीकारों ने कथात्मक लेखन के द्वारा समसामयिक जीवन के यथार्थ उसकी समस्याओं आशा आकांक्षाओं के साथ व्यवस्था के विरोध में युवा वर्ग में चेतना जाग्रत करने तथा पाठक को अन्तरंग प्रेरणा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। यहाँ कहानीकार ने स्वतन्त्रता के पश्चात कहानी के हर पहलू के संक्रमणकालीन दोनों छोरों को छूने का प्रयत्न किया है जिससे समाज में विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी शोषक शोषित मालिक मजदूर स्वामी और सेवक के बीच अपने अधिकारों कर्त्तव्यों और मूल्यों को मांगने को लेकर अविश्वास और क्रूरता भर गई अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये हर वर्ग जीवन को दांव में लगाने तक का संघर्ष शुरू कर दिया और एक क्रान्तिकारी परिवर्तन के साथ समाज एक प्रकाशयुक्त दिशा की ओर मुड़ गया।

मुख्य शब्द : अन्तरंग संवैधानिक, अनुशंसा, प्रभुता, अक्षुण्ण, उत्कर्ष, प्रजातन्त्र, सामन्तवादी,कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति, अन्योन्यक्रिया, व्यंजनात्मक, उत्कृष्ट, आकाँक्षा।

प्रस्तावना

मूल अधिकार

मूल संविधान में सात मौलिक अधिकार थे लेकिन 44 वें संविधान संशोधन (1979 ई0) के द्वारा सम्पत्ति का अधिकार (अनुच्छेद 31 एवं 19 एफ) को मौलिक अधिकार की सूची से हटाकर इसे संविधान के अनुच्छेद 300ए के अन्तर्गत कानूनी अधिकार के रूप में रखा गया है।

अब भारतीय नागरिकों को निम्न 6 मूल अधिकार प्राप्त हैं

1. समता या समानता का अधिकार (अनु0 14 से 18)
2. स्वतन्त्रता का अधिकार (अनु0 19 से 22)
3. शोषण के विरूद्व अधिकार (अनु0 23 से 24)
4. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (अनु0 25 से 28)
5. संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनु0 29 से 30)
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32)

मूल कर्त्तव्य

सरदार स्वर्ण सिंह समिति की अनुशंसा पर संविधान के 42 वे संशोधन (1976 ई0) के द्वारा मौलिक कर्त्तव्य को संविधान में जोड़ा गया। इसे रूस के संविधान से लिया गया है। इसे भाग 4 (क) में अनुच्छेद 51(क) के तहत रखा गया है। मौलिक कर्त्तव्यों की संख्या 11 है जो इस प्रकार है

1. प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों संस्थाओ, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करें।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उसका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, अखण्डता, एकता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।
4. देश की रक्षा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातत्व की भावना का निर्माण करें।
6. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और उसका संवर्धन करें।

8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे।
10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर सतत् बढ़ने का प्रयास करें।
11. माता–पिता या संरक्षक द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चों हेतु प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना (86 वां संशोधन)

प्रजातन्त्र

से तात्पर्य जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन

समाजवाद

समाजवाद, धर्म निरपेक्षता व गणतन्त्र जैसे शब्द जहाँ व्यक्ति को कम तथा समाज को अधिक महत्व दिया गया।

धर्म निर्पेक्षता

से तात्पर्य देश का कोई धर्म या पंथ न हो बल्कि सभी धर्मों को समान महत्व दिया जाये।

गणतन्त्र

जिस देश का प्रमुख जनता द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से चुना जाये।

परिचय

किसी भी समाज के विकास की धुरी वहाँ की शिक्षा व्यवस्था के इर्द–गिर्द घूमती है क्योंकि शिक्षित समाज में ही स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था की सोच पनपती है तथा प्रजातान्त्रिक समाज के लिए समानता, स्वतन्त्रता, न्याय और मानवीय सम्बन्धों का होना अति आवश्यक है। सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा और शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये सामाजिक परिवर्तन की अन्योन्यक्रिया ही समान्तर कथा साहित्य का विषय है। उसकी असली वजह उस समय के समाज में शिक्षा का अति पिछड़ा होना है क्योंकि 70 और 80 के दशक में समाज के आम आदमी में सामन्तवाद और शोषकों के प्रति प्रबल विद्रोह का भाव तो था, किन्तु अपनी बात कहने व समाज में एकता स्थापित करने की उपयुक्त विधि और मंच नहीं था।

मूल उद्देश्य

समानान्तर कथा साहित्य का मूल उद्देश्य समाज में व्याप्त शोषण के खिलाफ आम जनता में बौद्धिक चेतना का विकास करना था। क्योंकि स्वतन्त्रता के पश्चात भारत अंग्रेजों की गुलामी से तो मुक्त हो गया लेकिन सामन्तवादी, साहूकार, जंमीदार तथा शासन तक पहुँच रखने वाले लोगों का साधारण आदमी गुलाम बन कर रह गया। स्तरीकृत समाज की खाई इतनी चौड़ी थी कि उसको लाघँना तो दूर उस तरफ देखना भी मुश्किल था, अशिक्षा, गरीबी, जाति–पाँति के कारण समाज शोषक और शोषित में बटकर रह गया था। संविधान द्वारा पारित लोकतन्त्र प्रणाली का अर्थ केवल चन्द पढ़े लिखे लोग ही जानते थे। अतः ऐसी स्थिति में आम जनता को जागरूक करने, अपने अधिकारों के लिए लड़ने और अपने मूल अधिकारों और कर्त्तव्यों को जानने के लिए समकालीन कथाकारों ने कथा साहित्य को कल्पना लोक से उतारकर यथार्थ के धरातल पर ला खड़ा किया और समाज का यथार्थ चित्रण करना प्रारम्भ किया। इन समाकालीन कहानीकारों ने समाज की हर छोटी बड़ी समस्या का चित्रण अपनी कहानियों में किया तथा जीवनगत विसंगतियों को उभारा। तो कही अर्न्तविरोध और आत्मसंघर्ष व्यक्त होता हुआ दिखाई पड़ा। अतः प्रजातान्त्रिक मूल्यों को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम में समकालीन कथाकारों की निजी समस्या मानव समस्या बन गई वह समाज के बिखरे यथार्थ का संकलन करता रहा उसे पूरे मनोयोग से पाठक के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता रहा अन्ततः समामान्तर कहानी के पात्रों में बुद्धि तत्व का विकास होने से वह तर्कवादी बन गया तथा तर्क के आधार पर ही समाज की परिस्थितियों को समझने और परम्परागत मान्यताओं की अपेक्षा सिद्वान्तों को महत्व देने लगा। समकालीन कथाकारों ने अपनी कहानियों के पात्रों में आम आदमी को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। इन कहानीकारों में प्रमुख हैं– मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, अमर कान्त, मन्नू भण्डारी आदि।

अध्ययन का उद्देश्य

समकालीन कथाकारों ने अपनी कहानियों में किसी दार्शनिक, राजनीतिक अथवा सामाजिक व आर्थिक विचारधाराओं से प्रतिबद्व न होकर अपनी विशुद्ध अनुभूति की सच्चाई और अपने लक्ष्य की यर्थाथता के प्रति प्रतिबद्ध होना है क्योंकि समानान्तर कहानी का कहानीकार अपनी अनुभूति और कड़वे यथार्थ को अभिव्यक्ति करने में ईमानदार है भोगें हुए जीवन की सच्ची सृजन शीलता का प्रेरक है मानवता की अनुभूति जगाना ही कहानीकार का एक मात्र उद्देश्य है।

समानान्तर कहानीकार की एक मात्र समस्या मानव–मानव के बीच फैली विसंगतियाँ, भेदभाव नारी के प्रति हीन भाव, अशिक्षा, बेकारी, मानसिक दासता, वैचारिक भ्रष्टाचार जैसी तमाम समस्यायें और कारण है जो समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला बनाने तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यों का दम घोटता प्रतीत हो रहा है।

समकालीन कहानीकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने यह चित्र स्पष्ट रूप से खींचकर रख दिया है कि आज यथार्थरूप से मध्यवर्गीय दलित तथा मजदूरों की वास्तविक जिन्दगी की यथा स्थिति क्या है उनसे उनका जीवन जीने का हक भी छीना जा रहा है हमारे देश में सिर्फ कागजों में कानून बनते हैं लेकिन उसका वास्तविक लाभ उन्हें कहाँ मिलता है जो सच्चे अर्थों में उसके हकदार है। 70 दशक में प्रकाशित हिन्दी कहानियों में कहानीकारों ने काल्पनिक कुहासे का अम्बार नही लगाया बल्कि कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति को ही कहानी का माध्यम बनाया। इस दशक में कई पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हुआ जैसे–सारिका, माया, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्म युग, धर्म परिबोध, प्रगतिशील समाज, कादम्बनी और नवनीत आदि।

इन सब पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों में व्यवस्था का विरोध खुल कर हुआ है जैसे– पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध, आर्थिक दबाव से प्रभावित समाज का कमजोर वर्ग, पारिवारिक जीवन के वैषम्य, अकेले पड़ जाने का एहसास, सुरक्षा का प्रश्न, व्यक्ति–व्यक्ति के बीच परस्पर शिथिल होते सम्बन्ध स्त्री पुरूष के सम्बन्धों में तनाव, सामान्य जन तथा मध्यम वर्गीय जीवन की दिन व

दिन बदतर होती स्थिति, ग्रामीण अंचलो का करूण जीवन और मानवीय सम्वेदन आदि, इन सबके चित्रण से ही ये रचनायें परिपूर्ण है। अधिकांश रचनाकारों की दृष्टि आज के जीवन के वास्तविक संघर्षों पर केन्द्रित रही है। आम आदमी के सुख–दुख उसके आस–पास का वातावरण विवश होती परिस्थितियां राजनीतिक और सामाजिक उथल पुथल तथा व्यवस्था का सीधा–सीधा विरोध जैसे, (काशीनाथ सिंह) की कहानी सूरज कब निकलेगा (स्वयं प्रकाश) जलते हुए डैने (हिमांशु जोशी तथा सुदीप) की अन्तहीन कथाओं में हुआ है। इन कहानियों में व्यवस्था विरोध का जीवन्त स्वरूप सजगता के साथ देखा जा सकता है।

इस प्रकार समानान्तर कहानीकार अपने को आदर्शवादी नही मानते बल्कि समाज में मानवीय भाव बोध से सम्बद्व रहकर उसकी गतिविधियों में संलग्न होकर समाज को एक नई दिशा देने में आम आदमी के सक्रिय प्रयत्नों को अपना समर्थन देते है।

सीमित धारणाओं से आगे इतिहास और मनुष्य की चिरन्तन अपराजेय शक्ति में आस्था रखने वाला समानान्तर समय का साहित्य ही अखण्डित आम आदमी की उत्कृष्ट आकाँक्षाओं का प्रतिबद्व प्रहरी हो सकता है।

कमलेश्वर–मेरा पन्ना
सारिका–अक्टूबर 1974

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समानान्तर कथा साहित्य समाज में परिवर्तन की एक लहर लेकर उपजा और प्रत्येक युवा ह्रदय को अपने अपमान के विरोध और अधिकारों के हनन से जो आक्रोश पैदा होता है वह यथार्थ जीवन की प्रस्तुति और विद्रोह की भगिंमा को स्वर देता है क्योंकि समानान्तर कहानी के पात्रों में बुद्वि तत्व का विकास होने से यह तर्क वादी बन गया और वह परम्परागत मान्यताओं की अपेक्षा सिद्धान्तों को अधिक महत्व प्रदान करने लगा। यहां समानान्तर कहानीकार ध्वस्त होते सामाजिक मूल्य तथा नई अकाँक्षाओं के बीच द्वन्द्व झेल रहा आम आदमी की भयावह अन्तर्ध्वनियों को रेखांकित करने का प्रयास करता है। इसलिए यथार्थ की गहरी पकड़ में भाषा की सहजता खोती जाती है। यहाँ कहानीकार जीवन के एक भाग का चित्रण करके ही सम्पूर्ण जीवन की झांकी पाठक के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करता है मात्र खण्डीय चित्रण द्वारा सम्पूर्ण जीवन के प्रभाव के परिवर्तन की आकाक्षां एक इच्छा मात्र बन कर रह गयी आवश्यकता नहीं बन पायी। इसलिए इसमें सम्पूर्ण परिवर्तन नहीं दिखाई देता। साथ ही हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि समकालीन कहानियां आधुनिक मानव की खोज मात्र है जिसमें मानव की दिशा हीनता, भटकाव और दिशा प्राप्ति का प्रयत्न छुपा हआ है।

सुझाव

वास्तव में समाकालीन कहानियां जीवन परिदृश्य से यथार्थरूप से जुड़ी हुई है क्योंकि उनका कथ्य मानव नियति के साथ सम्बद्व हो जाता है और कहानियों के माध्यम से व्यक्त होता है, परन्तु जो उद्वेग मानव को सही दिशा न दे सके यर्थाथतः उसमें बहुत बड़ी कमी है और उसे सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो साहित्यकारों के चिन्तन का विषय है क्योंकि समानान्तर कहानी एक सही सोंच और सही दिशा को लेकर आगे बढ़ी किन्तु सफल अन्त को प्राप्त नहीं हुई जिससे कहानीकार का सार्थक प्रयास असफलता में परिवर्तित हो गया। इसके लिए समानान्तर कथाकार को समाज के आम आदमी के मानसिक परिवेश को अन्वेषित करना होगा जो समय की लड़ाई के साथ–साथ सम्पूर्ण को समझने से सम्बद्व हो, जो आदमी की भीतरी और बाहरी लड़ाई को जोड़ता है। जिससे कहानीकार सम्भावना सम्पन्न युवापीढ़ी को यथार्थता से जोड़ने में सफल हो सके। कहानियों की भाषा संश्लिष्ट अनुभव से जुड़ी होनी चाहिए तथा भावुकता व्यर्थ शब्द जाल, उलझाव तथा भारीपन से मुक्त सहज सपाट और व्यंजनात्मक होनी चाहिए जो कहानी को सही दिशा और दशा देने में सक्षम हो क्योंकि नयी सर्जनात्मक भाषा का बदलाव ही कहानी को विशिष्ट उपलब्धि प्रदान करने, भाषा में वस्तु स्थिति को सशक्त अभिव्यक्ति देने की क्षमता का पूर्ण प्रयोग किया जाना चाहिए।

अतः जिस जोश और उमंग के साथ कथाकार अपनी कहानियों के माध्यम से पाठक को लोकतान्त्रिक जीवन जीने के लिए उत्साहित करता है। अपने अधिकारों के लिए लड़ने तथा व्यवस्था परिवर्तन के लिए उद्वेलित करता है वह एक मात्र प्रयास बनकर रह जाता है क्योंकि उसे प्रशासन और न्याय पालिका का भरपूर सहयोग नही मिलता है। इन लोगों द्वारा हक मांग रहे लोगों की आवाज को बीच में ही दबा दिया जाता है। इसके लिए सर्वप्रथम कागजों में बने कानून को आम जनता तक पहुँचाने के लिए शिक्षा का सहारा लेना होगा क्योंकि बिना शिक्षित हुए समाज में व्याप्त इन समस्याओं का हल प्राप्त करना मुश्किल होगा, क्योंकि कानून व्यवस्था को जानने समझने और उस कानून व्यवस्था को आम आदमी तक पहुंचाने के लिए व्यवस्था विरोधी लड़ाई कलम के सहारे लड़ना होगा तभी वास्तविक विजय प्राप्त हो सकती है। और समाज का हर आदमी सुखी सम्पन्न और शान्तिपूर्ण जीवन जीने का सपना पूरा कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कहानी स्वरूप और संवदेना –डॉ0 राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. समकालीन हिन्दी कहानी –हरिहर प्रसाद विद्या साहित्य संस्थान, इलाहाबाद
3. कमलेश्वर –सिंह मधुकर, शब्दकार प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
4. नई धारा – डॉ0 काशीनाथ सिंह
5. आधुनिक हिन्दी कहानियाँ – डा0 लक्ष्मी नारायण लाल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी – कोश कथायन, शुक्ल राजेन्द्र शब्द की प्रतिष्ठान, कानपुर
7. नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर, शब्दकार 2203 गली डकौतान, तुर्कमान गेट, दिल्ली–110080